धमक नगाड़े की

(पर्दा उठते ही कोरस मंच पर आता है।)

एक ज़िला लाहौर पंजाब अंदर,
जिसकी मिलती नहीं मिसाल लोगो।
बारह कोस पर उसके शहर बसता,
नाम उसका सांदल की बार लोगो।
पुत्र-पुत्रियां उसके बहुत हिम्मती
हंसते-बसते खुशी के साथ लोगो।
अकबर बादशाह उनसे तंग बहुत,
नहीं शाह की उन्हें परवाह लोगो।
आख़िर तंग आकर अकबर बादशाह ने,
भेजी फ़ौज किया बुरा हाल लोगो।
पकड़ सामने सांदल सरदार किया,
रोका किस लिए हाल लोगो।
बादशाह से खौफ नहीं खाया
कैसा मालिया किया सवाल लोगो।
सुनकर आग-बबूला हुआ अकबर,
चेहरा क्रोध से हुआ लाल लोगो।
दिया हुक्म तुरंत जल्लादों को,
नहीं समझते ये कोई बात लोगो।
सिर काटकर तन से दूर कर दो,
उलटी उतारनी इनकी खाल लोगो।
इनके सिर दरवाज़े पर टांग देना,
भरके भूसे से टांगना खाल लोगो।
नाटक दुल्ले का शुरू अब कर रहे हैं,

पुत्र फरीद, पोता सांदल सरदार लोगो।
उठाई तलवार और जुल्म से ली टक्कर,
संग साथियों वो जूझा खूब लोगो।
क्या हुआ 'गर जूझा छह सौ बरस पहले'
दुल्ला अभी मौजूद हमारे बीच लोगो।
जब तक जुल्म से रहेगी टक्कर,
दुल्ला रहेगा लोगों को याद लोगो।

(कोरस धीरे-धीरे वापिस जाता है। दो सिपाही मंच पर आते हैं, उनके हाथों में नेजें हैं। एक तरफ उलटी टंगी लाश का पुतला है। खाल में भूसा भरा है, उस पर सिपाही नेजा मारते हैं। कुछ ग्रामीण लोग मंच पर आते हैं। वे आपस में बातें करते आ रहे हैं।)

ग्रामीण : लो भई, लाहौर शहर आ गया।
हां भई, आ गया।
देखो भई, हम जा रहे हैं दरबार में फ़रियाद करने, इसलिए बात ज़रा ध्यान से करनी है।
(जब आगे बढ़ते हैं तो सिपाही उन्हें रोक लेते हैं।)

एक सिपाही : अरे, कहां घुसे जा रहे ज़ाहिलो?

एक ग्रामीण : हमने दरबार में जाना है।

दूसरा सिपाही : दरबार में जाने की मनाही है।

दूसरा ग्रामीण : हमें फ़रियाद करनी है कि हम मालिया नहीं दे सकते।

एक सिपाही : भागो यहां से, आए हैं फ़रियाद करने *(वे पीछे हटते हैं तो उनकी नज़र टंगी हुई लाश पर जा ठहरती है।)*

सिपाही : अरे मूर्खो, क्या देख रहे हो?

ग्रामीण : ख़ान साहब, यह क्या शै है?

सिपाही : अरे मैं बताता हूं- ये बार के सरदार सांदल, उसके बेटे फ़रीद और उनके साथियों की खालें हैं- उन ख़बीसों ने बादशाह के ख़िलाफ बग़ावत की- बादशाह के कानून को ललकारा कहने लगे, हम मेहनत करते हैं, मिट्टी के साथ मिट्टी होते हैं, हमें दो जून की रोटी नसीब नहीं होती, बादशाह के अमीर कुछ नहीं करते, खाली बैठे सारी नियामतें भोगते हैं। बादशाह ने कहा, यह अल्लाह का क़ानून है, कई मशक्कत करने के लिए पैदा हुए हैं, कई कुर्सी पर बैठने के लिए ही पैदा हुए हैं, कइयों के लिए राज़

तख़्त कइयों के लिए फांसी का तख़्ता। उन्होंने कहा, यह तो अल्लाह का क़ानून नहीं है, अल्लाह ने सबको बराबर बनाया है। यह बादशाह का क़ानून है, हम इस क़ानून को नहीं मानते। वे बेवकूफ थे, उन्हें चाहिए था कि बादशाह का हुक़्म मानें, अगर बादशाह कहे कि मेंह बरस रहा है तो उन्हें छाता तान लेना चाहिए, बेशक बादलों का नामोनिशान न हो। अगर बादशाह कहे कि रात है तो सबको बिस्तरों में घुस जाना चाहिए, बेशक अभी दोपहर ही हो। बादशाह का हुक़्म मानना रियाया का फर्ज़ है, पर इन बेवकूफ़ों ने कहा कि हम इसे नहीं मानते, हमारे सिरों में भी दिमाग़ है। बादशाह ने कहा, जिन सिरों में दिमाग़ हैं, उन सिरों को कलम कर दिया जाए, इसलिए इनके सिर उतारे गए और उनमें भूसा भर दिया गया। समझे या नहीं ? नहीं समझे तो फिर मैं समझा दूंगा। अब दूर हट जाओ, ख़ान साहब आ रहे हैं, बड़े रंग में हैं, उनके रंग में भंग मत डालो।

(ग्रामीण एक तरफ हो जाते हैं, ख़ान अपने साथियों के साथ आते हैं।)

ख़ान : क्यों बहार खान, पानी कैसा है ?

बहार : ख़ान साहब, इससे अच्छा तो खट्टी लस्सी पिला देते।

ख़ान : हमने यही पानी पीकर लाहौर से पिशावर तक जीत हासिल की है।

मीर : बहार खान, हमारे ख़ान साहब ने बड़े-बड़े खानों को सर किया है।

अकल ख़ान : वो ख़ान नहीं नामर्द होंगे। अरे मीर, देखता क्या है, डाल ख़ान साहब को कुछ और, अभी पता नहीं इन्होंने कौन-कौन से मोर्चे फ़तह करने हैं।

ख़ान : बहार खान, हमने तो ज़िंदगी में सौ मोर्चों में से एक मोर्चा फ़तह कर लिया, जो सांदल और उसके पुत्र को बांधकर बादशाह के हवाले कर दिया।

मीर : ये बार वाले भट्टी तो बादशाह के लिए हौवा हैं।

बहार : बादशाह से बिल्कुल ख़ौफ नहीं खाते थे।

मीर : खुली बग़ावत पर उतारू थे।

ख़ान : पर खबीस हमारी ताकत को नहीं जानते थे।

अकल ख़ान : ख़ान साहब, ताकत से हमने इन्हें ज़ेर तो कर लिया है, इनके सिर कलम करके दरवाज़ों से भी लटका दिए हैं, इनकी खाल

उतारकर भूसा भी भरवा दिया है, पर सच मानो ख़ान, वे अभी तक मरे नहीं हैं, रात को सोए-सोए ख़्वाब में मुझे लगता है वे हम पर टूट पड़े हैं।

ख़ान : किस वहम में पड़ गए हो? वाक़ई बहार ख़ान, हमारी शराब में दम नहीं जो अकल ख़ान सोते हुए ख्वाबों में भी सहम जाते हैं।

अकल ख़ान : और ख़ान साहब, ये ख्वाब तब हकीकत बन जाएंगे, जब इनके बच्चे बड़े हो जाएंगे, जिनके बाप-दादाओं की लाशों को हम इस तरह ज़लील कर रहे हैं।

ख़ान : ये लाशें तो लटकाई ही इस लिए गई हैं ताकि बार के जाटों को कई पीढ़ियों तक याद रहे कि जो लोग बादशाह से टक्कर लेते हैं, उनका क्या हश्र होता है।

बहार : बादशाह की बादशाहत इसी तरह चलती है।

मीर : लोगों को काबू में रखने का यही तरीका है।

अकल ख़ान : क्या लाशों को लटकाने के लिए बादशाह ने खुद हुक़्म दिया था?

ख़ान : हां, फ़रीद और बूढ़े सांदल के बारे में बादशाह ने ख़ुद हुक़्म दिया था।

अकल ख़ान : और बाकी दूसरों के लिए?

ख़ान : दूसरों पर कार्रवाई हमने खुद की।

मीर : आख़िर बड़े मोहरी थे, इस तरह अकेले लटके अच्छे थोड़ा ही लगते?

बहार : और अपने बच्चों का तीरंदाज़ी का शग़ल पूरा हो रहा है।

अकल ख़ान : मुझे तो ऐसा महसूस हो रहा है कि जो बच्चे इन लाशों पर महंगी तीरंदाजी करके शग़ल कर रहे हैं उन्हें उसकी बहुत महंगी कीमत चुकानी पड़ेगी।

ख़ान : मतलब?

अकल ख़ान : जब बार के बच्चों ने बड़े होकर अपने पूर्वजों का बदला लिया। ये तो उनके मुर्दा जिस्मों में तीर मार रहे हैं, वे इनके ज़िंदा जिस्मों में से तीर पार करेंगे।

ख़ान : अरे रहने दो ख़ान साहब, इनकी औरतों को तो बंधक बनाकर हम अपने साथ ले आए हैं। इनकी औलाद हमारे घरों में नौकरों-चाकरों की तरह पलेगी, इन्हें कहां अपने बाप याद रहेंगे।

बहार : इनकी लड़कियां जब बड़ी हो जाएंगी, हमारे लड़कों की दूसरी

तीरंदाजी के काम आएंगी।

मीर : दूसरी तीरंदाजी ?

ख़ान : अरे बड़े भोले बनते हो, जैसे जवानी के दिनों में कोई तीर चलाया ही न हो।

बहार : ख़ान साहब की तरफ देख, बूढ़े हो गए हैं, साठ बेगमें हैं, पर अभी भी इनके तरकश में तीर बाकी हैं। *(दूर से चीखों की आवाज़ आती है।)*

ख़ान : लो, अपने सिपाही भी तीरंदाजी करने में लगे हुए हैं।
आप किन सोचों में पड़ गए हो ख़ान साहब ?

अकल ख़ान : सोच रहा हूं इंसान कितनी नज़दीक की सोचता है।

ख़ान : क्या मतलब ?

अकल ख़ान : आज जिन औरतों को तुम बंधक बनाकर ले आए हो, तुम उन्हें अपनी दासियां बना लोगे, रखैल बना लोगे पर तुम्हें क्या लगता है कि वे अपनी औलाद को कभी कोई कहानी नहीं सुनाएंगी ? अपनी औलाद को यह नहीं बताएंगी कि उनके पूर्वजों पर क्या जुल्म ढाए गए। कैसे उनकी मेहनत को लूटा गया, क्या वे बदला नहीं लेंगे ? फरीद की पत्नी, जो आज हामला है, कल उसके बच्चा होगा, क्या वो अपने बाप-दादा का बदला नहीं लेगा ?

बहार : छोड़ो जी, आगे की फिक्र क्यों करते हो, लड़का हुआ तो ही बदला लेगा।

मीर : पर अगर लड़की हुई ?

ख़ान : हमारे महलों की कनीज़ बनेगी।

बहार : हमारे बच्चे भी क्या याद करेंगे कि उन्हें क्या तोहफा दिया है हमने ? ईमान से कहूं तो ये बार की लड़कियां हैं बहुत खूबसूरत।

मीर : शरीर भी मशक्कत से पले, मांसल और गठीले।

बहार : अपनी बेगमें- यूं, रुई जैसी पोली।

मीर : पोली और खोखली।

बहार : और बार की औरतें ?

मीर : गन्ने की पोर-रस से भरी।

बहार : चूसो और फिर बेशक फेंक दो।

मीर : हमारी बेगमें हैं भी रसहीन और साथ में दुनिया भर के रोग।

अकल ख़ान : पर यह मत भूलो कि बार के कल्लर की सांपिनें बहुत ज़हरीली होती हैं– उनका डसा पानी भी नहीं मांगता।

मीर : पर हमारे ख़ान साहब भी पुराने सपेरे हैं सांपिनों को वश में करना जानते हैं... हा... हा... हा... हा... *(ख़ान और उसके साथी बाहर जाते हैं कोरस मंच पर आता है और गीत गाता है।)*

वे हाकिम मौज मना रहे, भूले अल्लाह का नाम, वे पीते मटके शराब के, उन्होंने लूटा पूरा जहान, जो बोलता उनके सामने, मिटा देते नामोनिशान। मां लद्धी के पुत्र जन्मा, रखा दुल्ला उसका नाम।

वह पुत्र उस फरीद का
जिसे मुगलों ने किया तबाह।
वो कहे, जो शाह हैं लूटते
मैं तोड़ूं उनकी बांह।
मैं लूट ख़ज़ाना शाह का, लोगों को करूं अता।
चोरों पर पढ़ते मोर हैं, अब पकड़ूं मैं वही राह।
दोस्तो, पकड़ूं मैं वही राह।

दूसरा दृश्य

(दुल्ला तीर कमान लिए निशानेबाजी कर रहा है और इसी निशानेबाजी में वह नंदी मिरासिन की गागर को बेंध देता है। वह (मिरासिन) क्रोध में गालियां बकती आ रही है। उसके हाथ में लाठी है, चेहरे पर गुस्सा तारी है।)

नंदी : आज फिर मेरी गागर तोड़ दी?

दुल्ला : हां, तोड़ दी।

नंदी : शर्म तो नहीं आती।

दुल्ला : मौसी, मैं तो ज़रा निशाना पक्का कर रहा था।

नंदी : *(हाथ मारकर)* अगर तेरा तीर थोड़ा नीचे लग जाता तो आज मेरा मिरासी *(पति)* विधुर हो जाता।

दुल्ला : लो, फिर तो फत्तू चाचा के ठाठ हो जाते। उसे एक और नई-नवेली दुल्हन मिल जाती।

नंदी : हां, तुम खसमखाने मर्द तो यही चाहते हो कि हम मरती रहें और तुम्हें नई-नवेली मिलती रहें, पर फिक्र मत कर, मैं ऐसे पीछा

छोड़ने वाली नहीं।

दुल्ला : *(शेखी से)* अच्छा मौसी, यह तो बता मेरा निशाना कैसा था?

नंदी : अगर निशानेबाजी का इतना शौक है तो जाकर उनके सिर फोड़ जिससे तेरे बाप-दादा की रूहों को तस्कीन मिले।

दुल्ला : किनके?

नंदी : अपनी मां से पूछ।

दुल्ला : वो तू ही बता दे मौसी।

नंदी : मैंने तेरी मां से चोटी खिंचवानी है। पहले ही तेरी वजह से मुझे बेइज्ज़ती झेलनी पड़ी।

दुल्ला : कैसी बेइज्ज़ती?

नंदी : तूने मेरे सात घड़े फोड़े- मेरे मिरासी ने मुझे सात बार पीटा- कहने लगा, तू लड़कों से चुहलबाजी करती है। तूने मेरे सात घड़े तोड़े, उसने मेरी सात हड्डियां तोड़ीं। तूने मां के पास जाकर शिकायत की तो मुझे उसने ये पीतल की गागर लाकर दी और तूने उस गागर को भी बेंध दिया। अब घर जाऊंगी तो मेरा मिरासी मुझसे पूछेगा, किसने तीर मारा, तो मैं उसे क्या जवाब दूं?

दुल्ला : मौसी, तू कहना दुल्ला भट्टी ने फोड़ दी।

नंदी : वो कहेगा, आवारा औरत, तू लड़कों से चुहलबाजी करने से बाज नहीं आती, इन मर्दों, खसमखानों का स्वभाव बड़ी शक्की होता है- खुद इधर-उधर मुंह मारते फिरेंगे पर अगर औरत किसी से बात भी कर ले तो इनके तन-वदन में आग लग जाती है।

दुल्ला : मौसी वह कुछ नहीं कहेगा, तू उसे कहना कि दुल्ले ने सलाम भेजा है, आज रात को आ जाए, महफ़िल सजेगी।

नंदी : *(सिर पर हाथ मारती है)* ना, मैं नहीं कहूंगी, शराब तेरी पिएगा और हड्डियां मेरी तोड़ेगा।

दुल्ला : क्यों?

नंदी : शराब पीकर वह कुत्ता बन जाता है, तेरे आगे तो दुम हिलाएगा, पर घर आकर मुझ पर भौंकना शुरू कर देगा, और अब भला आदमी बनकर मेरी गागर ठीक कर दे।

दुल्ला : *(झूठी हंसी हंसकर)* कर दूं?

नंदी : हां, बड़ा भला आदमी है, कर दे।

दुल्ला : *(लाठी दिखाते हुए)* जाती है यहां से या नहीं– नहीं तो गागर मार कर तेरा सिर फोड़ दूंगा।

नंदी : *(फिर कलपती है)* हाय, मेरा सिर क्यों फोड़ेगा ? अगर इतना ही ताकतवर है तो जाकर उनके सिर फोड़, जो तेरे बाप-दादा को खा गए।

दुल्ला : कौन खा गए ?

नंदी : अपनी मां से पूछ *(दुल्ला कुछ सोचते हुए चला जाता है... पछताते हुए)* हाय अल्लाह, मैं बदज़बान– मैंने तो बहन लद्धी के आगे सौगंध ली थी कि दुल्ले से यह बात नहीं करूंगी। अब क्या होगा ? चलो, जो अल्लाह को मंजूर होगा, वही होगा।
(पछताती हुई चली जाती है। दुल्ले की मां ओखली में कुछ कूट रही है। दुल्ला चारा-सानी कर रहा है। दोनों में बातचीत होती है।)

दुल्ला : मां मेरा नाम दुल्ला किसने रखा ?

लद्धी : मैंने रखा, पुत्तर।

दुल्ला : तूने मेरा नाम नत्थू क्यों नहीं रखा ?

लद्धी : तेरा सुंदर कलम जैसा नाक, फिर भला नत्थू क्यों रखती ?

दुल्ला : तूने मेरा नाम घसीटा राम क्यों नहीं रखा ?

लद्धी : तू जब चलता है तो ज़मीन पर धमक होती है-मैं तेरा नाम घसीटा राम क्यों रखती।

दुल्ला : तू मेरा नाम ऐरा रख देती, ग़ैरा रख देती।

लद्धी : मैं ऐरा क्यों रखती, ग़ैरा क्यों रखती, तू मेरा सैंकड़ों में से एक पुत्तर है।

दुल्ला : तो तूने मेरा नाम दुल्ला क्यों रखा ?

लद्धी : दुल्ला सूरमा।

दुल्ला : पर मां, सूरमे को अगर कोई ताना मारे ?

लद्धी : कहावत है कि बेटी से बुरी गाली नहीं, सिर से परे खून नहीं, घर से परे दंड नहीं, ताने से परे सूरमे को कोई शर्म नहीं।

दुल्ला : और मां तुझे यह भी मालूम है कि ताना सूरमे के लिए होता है, डरपोक बुज़दिल पर ताने का कोई असर नहीं होता।
(तीन ग्रामीण आते हैं और सलाम कहकर निकल जाते हैं।)

ग्रामीण 1 : सुना भई दुल्ला, क्या हाल है तेरा?

दुल्ला : बस ठीक है चाचा, अपने सुना।

ग्रामीण 2 : आ खेतों में ले चलें?

दुल्ला : बस तुम चलो, मैं आता हूं, ज़रा चारा-सानी कर लूं।

ग्रामीण 3 : सुना भई, डंगर-ढोर का क्या हाल है?

दुल्ला : बस ठीक है।

(तीनों चले जाते हैं। बात जारी रखते हुए...)

लद्धी : पर ऐसा कौन है जो सूरमे पुत्तर को ताना मार गया?

दुल्ला : यह मैं बाद में बताउंगा, पहले यह बता कि मां-पुत्तर के दरम्यान कोई भेद होता है?

लद्धी : पुत्तर के खून में मां का दूध होता है, इसलिए चोट पुत्तर को लगती है, दर्द मां को होता है।

दुल्ला : पर कुछ भेद ऐसे भी होते हैं जो मांएं पुत्तरों से छुपाकर रखती हैं।

लद्धी : पुत्तरों से उनका मोह ही उनसे यह सब करवाता है, पर आज तू कैसी बुझारतें बुझा रहा है, सच बता तेरे दिल में क्या है?

दुल्ला : मां, मेरे बाप-दादा को किसने मारा था?

(लद्धी को पता चल जाता है कि दुल्ला उससे क्या जानना चाहता है, पर उसे टालने की कोशिश करती है।)

लद्धी : तेरे बाप-दादा बड़े सूरमा थे।

दुल्ला : यह मेरे सवाल का जवाब नहीं, मां!

लद्धी : तेरे बाप-दादा तलवार के धनी थे।

दुल्ला : मां मैंने यह नहीं पूछा।

लद्धी : वे जो नगाड़ा बजाते थे, उसकी गूंज लाहौर तक जाती थी।

दुल्ला : मां मुझे जवाब दे, मेरे बाप-दादा को किसने मारा था?

लद्धी : अगर वे ललकारते तो उनकी ललकार बारह कोस तक सुनाई देती थी।

दुल्ला : *(खीझकर)* मां!

लद्धी : उन जैसा घुड़सवार पूरे बार में नहीं था।

दुल्ला : *(पूरे जोश के साथ)* पर मां उन्हें मारा किसने था?

लद्धी : लगता है तू आज मेरे से वो सब पूछकर दम लेगा जिसे मैंने पिछले बीस बरस से दिल में दबा रखा है। तेरे बाप-दादा अकबर से परेशान थे- वे कहते थे कि हमने बादशाह को

मालिया नहीं देना, हमारी बखारी खाली करके अपना खज़ाना भरने वाला राजा कौन होता है ?

दुल्ला : फिर क्या हुआ ?

लद्धी : वही, जो मौत को, तख्त को ललकारने वालों का होता आया है ?

दुल्ला : मैं समझा नहीं मां।

लद्धी : सूली... मेरे शेर पुत्तर ... सूली। जब वे तेरे बाप-दादा को पकड़ने आए तो आसमान से अभी तारों की पालकी भी नहीं उतरी थी, अभी चिड़िया भी नहीं चहकी थी, वे आए और उनकी मुश्कें बाधकर ले चले- मैंने तेरे बापू की तरफ देखा, उसकी आंखों से आग बरस रही थी, खून उतर आया था उसकी आंखों में, जाते हुए उसने एक पल मुझे देखा तो आंखें सजल हो आईं और बस इतना ही कहा, 'अच्छा लद्धी, रब्ब राखा' और तेरे दादा- के मुख से तो नूर टपक रहा था।

दुल्ला : उस वक़्त गांव वाले कहां थे ?

लद्धी : कुछ सो रहे थे, जो जाग रहे थे उन्हें वे साथ ले गए।

दुल्ला : फिर ?

लद्धी : फिर वो ख़बर आई जिसका मुझे डर था। तेरे बाप-दादा और साथियों को सूली चढ़ा दिया गया। उनकी लाशों की खाल उतारी गई, बस दुल्ले, अब मेरे से और मत पूछ- तीस बरस से तेरे बापू की यादें मैंने अपने सीने में संभाल रखी हैं, इस बार की धरती ने जहां वो जन्मा, पला-बढ़ा और जवान हुआ, उसके हथियार संभाल रखे हैं।

दुल्ला : कहां हैं वो हथियार ?

लद्धी : वो छिपते की तरफ आंगन के एक कोने में दबे हैं।

(दुल्ला ज़मीन में से हथियार खोदता है- लद्धी अंदर से नगाड़ा उठाकर लाती है- दुल्ला नगाड़े को थाम लेता है।)

लद्धी : तीस बरसों से इस नगाड़े की धमक नहीं सुनी दुल्लिया, आज तूने इसकी बात छेड़ी है- तो मैं शगुन करूंगी...

(दुल्ला हथियार लेकर नगाड़े को आगे बांध लेता है, लद्धी कच्ची लस्सी (दूध में पानी डालकर बनाई गई) और दिया जलाकर शगुन मनाती है और फिर नगाड़े को बजाने के लिए उसके हाथों में डंडे देती है।)

लद्धी : तीस बरस से यह नगाड़ा तेरे हाथों की छुअन को तरस रहा है दुल्लिया, बजा इसे।

(दुल्ला डंडे हाथ में लेकर ये शब्द बोलता है।

दुल्ला : मैं ढहा दूं दिल्ली के कंगूरे, भगदड़ मचाऊं तख्त लाहौर।

(नगाड़ा बजता है, उसकी आवाज़ सुनकर उसके गांव के और लोग भी आ जाते हैं, एक-एक हथियार उठा लेते हैं और इसी तरह जोश में बाहर निकल जाते हैं। इसी दौरान कोरस मंच पर प्रवेश करता है।)

कोरस : फिर उठा दुल्ला सूरमा, उसकी आंखें लाल-लाल।
यह किसने खुद बुलाया, छत चढ़कर अपना काल
वो किसने जन्मा सूरमा, जो झेले हमारा वार।
और मैं विधवा करूं लाहौरिनें, जिसकी कहीं न मिले मिसाल।
उठो मर्द दिलेर साथियो, सिर मांगे हमारी बार।
ये फोड़ो घड़े शराब के, ये नहीं हमें दरकार।
लहू मांग रही कल जोगिनें, हम (आज) पूरा करें इकरार।
आज दो तरफा मुठभेड़ है, एक बार, एक सरकार।
कल लोग सुनाएं कहानियां, यूं मर्द दिखाते ज़ौहर।
ये नगाड़ा बज रहा बार में, साथियो, पहुंचे धमक लाहौर...

तीसरा दृश्य

(एक सूबा पांच हजारी अस्थाई तौर पर खेमा लगाकर बार के इलाके में ठहरा हुआ है और कुनबे में दुल्ला का चाचा चोरी-चुपके एक तरफ से आता है।)

चाचा : मेरा नाम है अली,
मैं कुनबा भाई फरीद का।
कभी-कभी हूं दीखता, जैसे चांद ईद का।
एक तो सांदल-बार के लोग बहुत ही हरामखोर।
दुल्ला मेरा भतीजा, कल का छोकरा, सूगला-सा
बनाया उसको सरदार,
बात मेरी नहीं कोई पूछता।
जैसे मैं भट्टी नहीं, होऊं कोई ख़ाकसार।
यहां सूबा आया है पांच हजारी।

मैंने भी की है अपनी कारगुज़ारी।
दुल्ले को उकसा आया हूं
रात को डाका डालना, ऐसे मौके नहीं आते बार-बार।
और अब करता हूं सूबे को भी ख़बरदार।
रात को दुल्ला आएगा, पकड़ा वो जाएगा।
कुनबे वाले ऐसे मरेंगे, आंगन खाली करेंगे।
रास्ता साफ करेगा, लद्धी भाभी का बरखुरदार।
अली मैदान में गरजेगा बन भट्टियों को सरदार।
(खेमे के अंदर जाते हुए को सिपाही रोक लेते हैं।)

सिपाही : कौन है तू?

अली : एक भला आदमी हूं। सूबा पांच हजारी से मिलना है।

सिपाही : उनसे मिलने की मनाही है।

अली : *(जेब में से कुछ रुपये निकालता है)* ये लो अपना हिस्सा *(दर्शकों की तरफ)* आज के दौर में यही खुदा है।

सूबा : *(दूर खेमे से)* कौन है पहरेदारो?

सिपाही : एक भला आदमी है, जनाब।

सूबा : क्या चाहता है?

अली : जी, मैं बार का भट्टी हूं।

सूबा : भट्टी तो लुटेरे होते हैं।

अली : मैं उनमें से नहीं हूं- दुल्ला उनका सरदार है।

सूबा : कौन सा दुल्ला? जिसके बाप-दादाओं की लाशें बरसों तक लाहौर के बाहर टंगी रही?

अली : हां जी, वह राहगीरों को लूट लेता है।

सूबा : तो फिर?

अली : मैं आपको ख़बरदार करने आया हूं।

सूबा : तू हमें खबरदार करने आया है? तेरे होश तो ठिकाने है? उसने हमारे साथ टक्कर लेकर मरना है।

सिपाही : अरे, ये नत्थू बनिए के तंबू नहीं लगे- सूबा ख़ान बहादुर पांच हजारी का खेमा है- यहां कोई परिंदा भी पर नहीं मार सकता।

अली : आप बड़े लोग हैं- आपके पास बड़ी दौलतें हैं- आप उजाड़ में खेमा लगाए बैठे हो- दिल बहलाने के लिए आपके पास कोई शै नहीं- इसलिए रात को महफिल तो सजेगी ही?

सूबा : हां, ज़रूर सजेगी।

अली : शराब के मटके भी खाली होंगे ?

सूबा : वो तो होंगे ही।

अली : 'कंजरियों' का नाच भी देखोगे ?

सूबा : वो तो देखेंगे ही।

अली : फिर वे आपके साथ खेमे में भी जाएंगी ?

सूबा : पर तू कहना क्या चाहता है ?

अली : जनाब हम खुद सरदार हैं, हमें बड़े लोगों की करतूतों का पता है।

सूबा : आगे बोल।

अली : और उसके बाद नींद भी ऐसे आती है जैसे घोड़े बेचकर सोए हों।

सूबा : *(बातों में आकर)* तुम्हें बात करने का सलीका आता है।

अली : पर घोड़े असल में बेचे नहीं होते- वे तो खूंटे से बंधे होते हैं और ऐसे ही वक़्त में दुल्ला आता है और घोड़े खोलकर ले जाता है।

सूबा : अरे, दुल्ले को पता नहीं, हम पांच हजारी सरदार हैं- पांच हजार पैदल और घुड़सवार हमारी फौज़ है- दुल्ले को हम पीसकर रख देंगे।

अली : जी, मैं भी यही चाहता हूं कि आप दुल्ले को पीसकर रख दो।

सूबा : जा, जाकर आराम से बैठ, रंग में भंग मत डाल, अगर दुल्ला यहां आया तो अपनी मौत साथ लेकर आएगा।

अली : जी, मैं भी यही चाहता हूं।

सूबा : अरे, पहरेदारो! बार का इलाका है, पहरा ध्यान से देना।

सिपाही : जी, जनाब।

(सूबा जाता है, अली फिर उसके पीछे जाने की कोशिश करता है- सिपाही रोकते हैं।)

अली : चल अली अब अपनी राह पर।

सिपाही : आग लगाई नारद अपनी राह पर।

(अली को टांग मारते हैं, वह मंच से बाहर चला जाता है।)

सिपाही 1 : जागते रहो भई, जागते रहो।

सिपाही 2 : जागते रहो भई, जागते रहो।

सिपाही 1 : अरे पहले खुद तो जाग ले।

सिपाही 2 : जाग तो रहा हूं।

सिपाही 1 : उस ग्वालिन से कम लस्सी पीनी थी।

सिपाही 2 : कम क्यों पीता ?

सिपाही 1 : क्यों ?

सिपाही 2 : अरे ग्वालिन चीज़ ही कमाल की थी।

सिपाही 1 : फिर ?

सिपाही 2 : वो पिलाती रही और मैं पीता रहा।

सिपाही 1 : तू पीता रहा।

सिपाही 2 : वो कहे, हमारे बार के लोग मटका पी जाते हैं।

सिपाही 1 : और तेरा लोटे से पेट भर गया।

सिपाही 2 : तुम्हें कैसे पता है ?

सिपाही 1 : मुझे भी उसने ऐसे ही कहा।

सिपाही 2 : झूठ।

सिपाही 1 : क्यों ?

सिपाही 2 : तेरी तरफ तो उसने आंख उठाकर भी नहीं देखा।

सिपाही 1 : हां, तुम्हें तो वो मक्खन खिलाती रही।

सिपाही 2 : हां, अपनी शान है।

सिपाही 1 : बड़ा आया शान वाला- दुल्ले का नाम सुनकर तो तेरी जान निकल जाए।

सिपाही 2 : और तेरी न निकले ?

सिपाही 1 : हां, यह तो ठीक है।

सिपाही 2 : क्या ठीक है ?

सिपाही 1 : तेरी भी निकले–और मेरी भी निकले।

सिपाही 2 : इसलिए तो कहता हूं–जागते रहो भई जागते।

सिपाही 1 : जागते रहो, भई जागते रहो।

(तंबू हिलते हैं- सिपाही डर जाते हैं)

सिपाही 1 : यार, यह हिलजुल कैसी है ?

सिपाही 2 : हवा से खेमे हिल रहे हैं।

सिपाही 1 : मुझे तो कोई परछाई निकलती दिखी।

सिपाही 2 : मटकी वाली ग्वालिन होगी।

सिपाही 1 : हाय, इस वक़्त कहीं से आ जाए।

(मर्दाना परछाई निकलती है।)

सिपाही 2 : यह ग्वालिन नहीं मुझे तो कोई गुज्जर लगता है।

सिपाही 1 : दुबक कर बैठ जा।

सिपाही 2 : पर हम तो हैं पहरेदार।
सिपाही 1 : मत भूल, ये भी है दुल्ले की बार।
सिपाही 2 : सबको जगाएं।
सिपाही 1 : क्यों फांसी गले लगाएं।
सिपाही 2 : वे सब लूट ले जाएंगे।
सिपाही 1 : अपने बाप का क्या छीनकर ले जाएंगे।
सिपाही 2 : यह घोड़ा पांच हजारी है।
सिपाही 1 : हमें तो जान प्यारी है।
सिपाही 2 : दुबक कर बैठ।
सिपाही 1 : ज़माना देख।
सिपाही 2 : भले दिन आएंगे।
सिपाही 1 : दुल्ला और उसके साथी जाएंगे।

(दुल्ला आता है।)

दुल्ला : कौन है यहां?
सिपाही 1 : हम हैं माई-बाप।
सिपाही 2 : पहरेदार हैं माई-बाप।
दुल्ला : फिर पहरा क्यों नहीं देते?
सिपाही 1 : पहरा देते थे।
सिपाही 2 : सोए हुओं को जगाते थे।
सिपाही 1 : पर सोए तो सोए पड़े हैं।
सिपाही 2 : नशे में डूबे पड़े हैं।
सिपाही 1 : हथियार उनके दूर पड़े हैं।
सिपाही 2 : जीते जी मरे पड़े हैं।
सिपाही 1 : आप हमें करो माफ।
सिपाही 2 : माल जितना मर्ज़ी करो साफ़।
दुल्ला : ओए क्या नाम हैं तुम्हारे?
सिपाही 2 : मेरा नाम मट्टू-इसका नाम चट्टू।
सिपाही 1 : हम दोनों भाड़े के टट्टू।
दुल्ला : सूबा किस खेमे में हैं?
सिपाही 1 : ऊंचे खेमे में।
दुल्ला : और कौन है वहां?
सिपाही 2 : बाएं औरत है।

सिपाही 1 : दाएं औरत है।

सिपाही 2 : अगर पूछो कहां है सूबेदार?

सिपाही 1 : फंसा है दोनों के बीच।

दुल्ला : अरे पहरेदारो! ये कौन सा सूबा है?

सिपाही 1 : जी, पांच हजारी है।

सिपाही 2 : यही इसे खुमारी है।

दुल्ला : कहां से आया है वो?

सिपाही 1 : कश्मीर से आया है।

सिपाही 2 : बादशाह के लिए नज़राना लाया है।

दुल्ला : कैसा का नज़राना?

सिपाही 1 : बादामों के बोरे।

सिपाही 2 : रेशम के डोरे।

सिपाही 1 : पालम के चावल।

सिपाही 2 : सोने के कटोरे।

सिपाही 1 : ताकतवर घोड़े।

सिपाही 2 : कीमती जोड़े।

सिपाही 1 : ऊन के दोशाले।

सिपाही 2 : सोने की मूठ वाले भाले।

दुल्ला : अच्छा, तो तुम करो पहरेदारी।

(शोर-शराबा होता है- थोड़ी लड़ाई होती है-पहरेदार एकदम अपनी तलवारे फेंक देते हैं- दुल्ला सूबा पांच हजारी को नंगी हालत में मंच पर लेकर आता है।)

दुल्ला : जा, जाकर कह देना अपने बादशाह से कि बार में अभी दुल्ला जिंदा है, हिम्मत है तो दो-दो हाथ कर ले।

(दुल्ला उसे बाहर की तरफ धक्का देता है- दुल्ले के साथी नज़राने का साज़ो-सामान लूटते हैं- कोरस मंच पर आता है।)

कोरस : फिर दुल्ले ने हमला बोला,
आंखें मलते उठे ख़ान।
वे भागें सोए- अधसोए,
बचे कैसे उनकी जान।
वे गाय, बछड़े बन गए,
जो थे सरकारी सांड।

जो औरतों के संग सो रहे थे
वे नंगे ही भागे जा रहे,
पकड़-पकड़ कर दुल्ले ने पूछा,
अब कैसे मिज़ाज हैं ख़ान,
वे कानों को हाथ लगा रहे
आप बख़्शो हमारी जान।
दुल्ले ने ख़ज़ाना लूटा,
उसने ख़ज़ाना लूटा,
उसने सब कुछ किया वीरान।
जाओ, जाकर कह दो बादशाह को,
यह योद्धाओं की ललकार।
परवाह न करे लाहौर की,
यह दुल्ले की है बार।

चौथा दृश्य

(गांव का दृश्य है। लोग अपने-अपने काम-धंधे में लगे हुए हैं। एक तरफ दुल्ले का घर है, दूसरी तरफ मियां छोटे बच्चों को पढ़ाते-पढ़ाते सो जाता है, बच्चे आपस में लड़ते-झगड़ते हैं। इस लड़ाई के दौरान मियां जी उठ जाते हैं और सबको 'मुर्गा' बन जाने को कहते हैं। इसी दौरान गीत शुरू हो जाता है। मियां जी गीत में मस्त हो जाते हैं और लड़के भी बैठ जाते हैं।)

आक का दूध पिला सजन हमें आक का दूध पिला
आक का दूध घूंट प्रेम की, बेहिचक हमें दे पिला।
कच्चे दांत के दूध की धारा, मांओं से ली पा।
चिकने, मीठे, चटक लहू से, कड़वाहट दे मिटा।
धीमा-धीमा रिसता है जो, बहके मन की एक दवा है,
रगों में आग जला।
सजन हमें आक का दूध पिला...

(मां लद्धी और उसकी पुत्रवधू के दरम्यान बातचीत शुरू होती है।)

लद्धी : सुन री बेटी, क्या राग लिया है छेड़ जननी का दूध सदा ही मीठा,
आक के दूध का बुरा है मोह।

नूरमदा : सुन री सासू मां, मैंने देखा बुरा ख्वाब पहले टूटा पाया पलंग का,
जहां भोगा मैंने सुहाग।
मेरा चूड़ा टूटा बांह से, उजड़ी मेरी मांग।

लद्धी : अरी बेटी, सचमुच यह तो बुरा ख्वाब।

नूरमदा : रोक री सासू माई, तेरा पुत्तर बड़ा है 'लाट'।
मुगलों के घर डाके मारता ना माने उनकी आब।
उन्होंने उसे सूली दिया चढ़ा दिया, कहता है मेरा ख्वाब।

लद्धी : सुन री बहू रानी, यह तो भाग्य का फेर। गादड़ी जन्में पांच सात,
मैंने जन्मा एक ही शेर। वह बदला लेगा बाप का, मैं देखूं वही
सवेर। ख्वाब न बनें हकीकत, ये सब वहमों के फेर।

नूरमदा : सुन री सासू माई, तेरे पुत्तर का नहीं एतबार।
संग लेकर कुछ हमलावर, वह करता मारममार।
रात को नचाए औरतें, दिन में खेले शिकार।
वक़्त आने पर जो भाग खड़ें हों,नहीं दुल्ला उनका यार।
(इतनी देर में लड़के फिर झगड़ने लगते हैं और एक दूसरे को घूंसे मारते हैं। नूरा सो जाता है, उसके साथी उसे जगाते हैं। मियां जी फिर सब को 'मुर्गा' बना देते हैं। इसी दौरान 'मिरासी' आता है।)

मिरासी : अरे मियां जी, इन लड़कों ने क्या कर दिया।

मियां जी : अरे मिरासी इन्हें 'आदमी' बना रहा हूं।

मिरासी : अगर इन्हें आदमी बनाना है तो इन्हें सीधे खड़े करो, ऐसे तो ये 'टट्टू' बन जाएंगे।

नूरा : *(धीरे से)* चाचा मियां जी को कह दो, छोड़ दें।

मिरासी : अरे कहता हूं, कहता हूं- मियां जी, जाने दो इन छोकरों को।

मियां जी : अरे जाओ, जाकर तख्तियां पोत लो।

सारे लड़के : आधी छुट्टी सारी, मियां मक्खी मारी।

मियां जी : अरे हरामजादो, सारी छुट्टी नहीं हुई है, तख्तियां पोत कर यहां आ जाओ। मियां मक्खी मारी, इनके बाप ने तो जैसे शेर मारे हों।

मिरासी : *(हंसते हुए)* मियां जी, एक बात कहूं, बार के लोगों को ज़रूरत है मर्दों की।

मियां जी : *(लाठी घुमाते हुए)* इसीलिए तो इन्हें इल्म देकर मर्द बना रहा हूं।

मिरासी : अगर ये इसी तरह मुर्गे बने रहे तो वैसे ही नामर्द हो जाएंगे, हमने तो आपको तजुरबे की बात बता दी है। अब आपके सामने 'मुर्गा' बने बैठे हैं फिर औरतों के सामने बैठेंगे। एक बात कहूं मियां जी, बुरा तो नहीं मानेंगे।

मियां जी : अगर बुरा मना भी लिया, फिर कौन सा तू बात कहने से टल जाएगा?

मिरासी : आपका इल्म थोथा है– और ये किताबें भी निरा झूठ का पुलिंदा हैं– आदमी को हवा में उड़ाएंगी, पर अपनी माटी की बात नहीं करेंगी।

मियां जी : अरे क्या मतलब है तेरा?

मिरासी : आपके मदरसों में पढ़ाया जाता है कि बड़ों का आदर करो।

मियां जी : तो इसमें क्या बुराई है?

मिरासी : अगर बड़े काम ही ऐसे करें जो अदब करने के लायक न हों तो बच्चे बेचारे क्या करें?

मियां जी : यह बच्चों का काम नहीं है कि बड़ों के काम पर नुक्ताचीनी करें।

मिरासी : अगर बड़े बच्चों को कहें कि हमेशा सच बोलो और खुद हमेशा झूठ बोलें तो बच्चे तो बेचारे मर लिए।

मियां जी : अरे कैसे मर लिए?

मिरासी : अगर बच्चे देखें कि उनके बड़े बुजुर्ग बिल्कुल डरपोक हैं– जो चाहे उन पर सवारी कर ले– अगर बड़ों में जुर्रत ही न हो कि इंसाफ के लिए डट सकें–हक़ के लिए लड़ सकें तो क्या बच्चों को बड़ों का अदब करना चाहिए? क्या आपकी किताबों में इन सवालों के जवाब हैं? नहीं हैं। इसीलिए कहता हूं तुम्हारा इल्म थोथा है।

मियां जी : अरे मिरासी, इन किताबों में समझदार आदमियों की अक्ल का निचोड़ है।

मिरासी : छोड़ो मियां जी– ये आपकी किताबें लाहौर से लिखकर आई हैं– शाह और अमीरों के ज़र–खरीद आलिमों की लिखी हुई हैं– और उनमें वही समझदारी या सच है जो अमीर खानों का सच है– इन किताबों में यह कहीं लिखा गया कि जो कुछ नहीं करते। वे हयाती की सारी नियामतों पर कब्जा जमाए बैठे हैं और जो मिट्टी में मिट्टी हो रहे हैं, वे दो वक़्त की रोटी से भी

अवाज़ार हैं। ऐसा क्यों है ?

मियां जी : अरे मिरासी, अगर ये बातें अपने तालिबे-इल्मों की पढ़ाने लगें तो सब जगह गदर पैदा हो जाए- भाईचारे का तमाम बंदोबस्त तबाह हो जाए।

मिरासी : आखिर सच्ची बात मुंह से फूट पड़ी न मियां जी- यह सारा इल्म है ही इसीलिए कि बड़े आदमी बड़े बने रहें और छोटे उम्रभर उनकी चाकरी करते रहें। मियां जी, ये बार के लड़के हैं- इनके बड़े बुजुर्ग ज़ालिमों से भिड़ते रहे हैं, इन्हें लाहौर वाला इल्म नहीं बल्कि वो इल्म दो जो बार के कल्लरों में जन्म लेता है।

(नूरा को ढूंढता हुआ।) नूरा, ओ नूरा...

नूरा : क्या बात है, चाचा ?

मिरासी : अरे नूरा, अब्बा कहां गया है ?

नूरा : मामा के पास मेला देखने गया है।

मिरासी : अगर पीछे से मुगल टूट पड़े तो ?

नूरा : चाचा, हम यहां मर तो नहीं गए, अब्बा की कटार घर में पड़ी है, दादा की कटार घर में पड़ी है।

मिरासी : शाबाश- मियां जी, इसमें अभी जान है, इस पर आपकी किताबों का कोई असर नहीं हुआ।

मियां जी : अरे मिरासी, तू इन किताबों से बड़ा तंग है ?

मिरासी : मियां जी, हमने तो देखा है- ये पढ़ाकू ही भाईचारे का सबसे निकम्मा तबका हैं, धुले कपड़े पहन लिए- न काम है काज है- लाहौर क इंतजामियां में जितना भी गंद है मियां जी, ये आपकी किताबें पढ़ने वालों का ही किया धरा है। औरतों के कदमों में बैठने वाले! अगर इनकी औरतें कहें कि हमारे नज़दीक मत आना, पहले सोने की तिल्ली लाकर दो तो ये शोहदे रातभर सोचते रहेंगे कि कल पटवारखाने जाकर किसकी खाल उतारनी हैं- यह बंदोबस्त कानून भी इन्हीं की देन है- बहस करते रहो, बेशक हाथ कुछ लगे या नहीं।

(ठक-ठक की आवाज़ और शोर होता है। लड़कियां छत पर चढ़कर देखती हैं।)

एक : अरी, यहां तो ढेरों तंबू लग रहे हैं।

दो : कोई बड़ा व्यापारी होगा- रात बिताने को तंबू लगा रहा होगा।

तीन : आदमी भी बहुत सारे हैं।

चार : सामान भी बहुत सारा पड़ा है।

एक : अरी, यह तो फिर कोई बादशाह के लिए नज़राना ले जा रहा है।

दो : इसीलिए तो सिपाही साथ हैं।

तीन : बोरियों में कागज़ी बादाम होंगे।

चार : जब से दुल्ला भैया ने राजा को दिया जाने वाला कश्मीर वालों का नज़राना लूटा है, इसे तो कागजी बादामों का स्वाद पड़ गया है। *(सारी हंसती हैं)*

एक : अरी, असली स्वाद तो गिरी का है, बादाम काग़ज़ी हो या काठा।

दो : बादाम वो जो चिकोटी काटते ही टूट जाए।

तीन : वो क्या बादाम हुआ जिसे तोड़ने के पहले बाट ढूंढने पड़ें।

चार : इस बादामों की शौकीन को देखो, कैसे चेहरे पर लाली चढ़ी हुई है।

एक : इसका मर्द तो अपने हाथों से इसे भिगो–भिगोकर गिरियां खिलाता है।

दो : अरी, दिन में या रात में?

तीन : तुम क्यों जलती हो– तुम भी खा लिया करो– तुम्हारे मर्दों के हाथ तो नहीं कटे हुए।

चार : हमारी ऐसी किस्मत कहां?

एक : अरी वो देखो, उन्होंने क्या उठा रखा है।

दो : पालम के चावलों की बोरियां होंगी।

तीन : खुशबू यहां तक आ रही है।

(लद्धी आती है।)

लद्धी : अरी लड़कियो, क्या देख रही हो?

चार : ताई, लगता है कोई बड़ा व्यापारी मैदान में आकर ठहरा है।

लद्धी : अरी, मेरी तो दूर की नज़र जवाब दे गई।

एक : *(देखकर)* मैं बताती हूं ताई– चालीस तंबू हैं।

दो : आदमियों की तो कोई गिनती ही नहीं है।

तीन : बहुतों के पास नेजे और तलवारें हैं।

चार : नौकर–चाकर शराब की सुराहियां लेकर इधर–उधर घूम रहे हैं।

लद्धी : ओ मरजाणियों, ये तो मुगलों ने धावा बोल दिया।

सारे : मुगल?

लद्धी : मैं किसी को भेजूं, शताबी घोड़ा दौड़ाए- जाकर दुल्ले को बुला लाए।

तीन : हमने तो समझा था कि कोई व्यापारी हैं।

चार : हां, तब पता चलेगा जब वे तेरी चोटी पकड़कर चक्की के घेर की तरह घुमाएंगे।

तीन : अरी, मुझे अलग से घुमाएंगे- तुम्हारी चोटियां नहीं पकड़ेंगे।

एक : हमारा मर्द कौन-सा हमें बादाम खिलाता रहा है।

दो : पोले से मुंह से पालम के चावल खाया करती थी।

चार : ऊनी दोशाले ओढ़-ओढ़कर बैठा करती थी।

तीन : अरी, तुम तो मेरे पीछे ही पड़ गई हो।

एक : हमारे मर्दों ने न तो कभी हमें गिरियां खिलाईं।

दो : न अपने हाथों से कभी हमारे मुंह में डाली।

तीन : तुम खा लेती, किसी ने मना थोड़े ही किया था।

चार : अरी, मेरा कहां गिरी खिलाता है, हर बात अपनी मां से पूछकर करता है।

एक : और मेरा वो तो अपनी बहन का पिछलग्गू है।

दो : हमारे वाले से तो कभी छिलका ही नहीं उतरा, हमें गिरी क्या खिलाएगा।

तीन : अरी तुम्हें मजाक सूझते हैं- ऊपर से मुगल चढ़ आए हैं।
(फिर शोर होता है, ठक-ठक की आवाज़, नूरा आता है।)

नूरा : *(घबराया हुआ)* दादी, मुगलों ने डेरा जमा लिया है।

लद्धी : हां पुत्तर, जा घोड़े पर चला जा और अब्बा को ख़बर...

नूरा : नहीं दादी- मुझे दादा की कटार दे जो अंदर संभालकर रखी है।

लद्धी : नहीं पुत्तर, वो अभी तेरे इस्तेमाल की चीज़ नहीं है, तू चला जा और पिता को बुला कर ला।

नूरा : नहीं, अगर मैं चला गया तो दादा की रूह मुझे लानत भेजेगी।

मियां जी : नूरा अपनी दादी बात मान ले, यहां से चला जा। मुगल आ पड़े तो वे सबके साथ तुम्हें भी बांध लेंगे, तेरे बड़े बुजुर्गों से इनकी दुश्मनी है।

नूरा : मियां जी, आप उस्ताद हो- और अब्बा कहता है, उस्ताद रब्ब के बराबर होता है। मैंने आपकी हर बात मानी है पर यह बात नहीं मानूंगा।

मियां जी : तू मेरा होनहार शागिर्द है, तुमसे मुझे बड़ी उम्मीदें हैं, तेरा इल्म अभी पूरा नहीं हुआ, तू यहां से चला जा और अपने पिता को ख़बर कर।

नूरा : मियां जी, मेरा सबसे बड़ा इल्म है कि मैं बार के कल्लरों का नाम बदनाम न होने दूं।

मियां जी : बहन लद्धी, तू ही इसे समझा।

लद्धी : नहीं मियां जी, अब कोई फायदा नहीं है।

(लद्धी अंदर कटार लेने जाती है।)

मियां जी : नूरमदी, तू तो मां है, तू ही इसे रोक।

नूरमदा : मियां जी, बार में जब बच्चे जन्मते हैं तो दादियां तलवार को पानी से छूकर उनके मुंह से लगाती है, जब जन्मघुट्टी ही तलवार की हो तो फिर कोई तलवार उठाए बगैर कैसे रह सकता है?

(दादी नूरा को कटार देती है।)

नूरा : *(अदब से)* अव्वल नाम लूं, परवरदिगार का।
दूसरा नाम लूं, जन्म धरती बार का।
तीसरा नाम लूं, सांदल बार का।
चौथा नाम लूं, सूरमाओं की कटार का।

(इसी दौरान शोर होता है, आवाज़ें और नज़दीक आती हैं, नूरा तलवार उठाकर सारी औरतों के आगे खड़ा हो जाता है। इतने में मुगलों का सरदार सिपाहियों के साथ आ धमकता है।)

अलाउद्दीन : *(नूरा से)* फेंक दे तलवार अगर जान की सलामती चाहता है।

नूरा : *(जोश से)* सूरमे तलवार फेंकने के लिए नहीं उठाते।

अलाउद्दीन : कौन है तू?

नूरा : पुत्तर दुल्ले का, रहने वाला बार का, पोता फरीद का पड़पोता सांदल सरदार का।

अलाउद्दीन : तेरा बाप कहां गया है?

नूरा : बाहर गया है।

अलाउद्दीन : हरामखोर, यह क्यों नहीं कहता कि हम से डरकर छुप गया है।

नूरा : मुंह संभाल कर बात कर, मैदान छोड़कर भाग जाना लाहौरियों की रवायत है, बार के लोगों की नहीं।

अलाउद्दीन : बड़ा ग़रूर है।

नूरा : शक है तो आजमाकर देख ले।

अलाउद्दीन : सिपाहियो! पकड़ लो इस छोकरे को।

(सिपाही आगे बढ़ते हैं।)

नूरा : ख़बरदार।

(नूरा और सिपाहियों के बीच लड़ाई होती है, इस लड़ाई के दौरान नूरा की तलवार टूट जाती है और सिपाही नूरा को बांध लेते हैं।)

अलाउद्दीन : क्यों बरखुरदार।

नूरा : यह मेरी नहीं है हार।
टूटा है लोहा, लोहे की है हार।

अलाउद्दीन : बांध लो इस छोकरे को, बंधक बना लो सब औरतों को और इन्हें बादशाह के पास भेज दो। सिपाहियो! वीरान कर दो इस गांव को, बंजर बना दो इस धरती को।

मियां जी : अलाउद्दीन, तेरा यह दस्तूर ठीक नहीं है।

अलाउद्दीन : बादशाहों का यही दस्तूर है, जिस धरती से बग़ावत उठती है, उस धरती को बंजर बना दिया जाता है।

(इसी दौरान एक सिपाही मियां जी को मार गिराता है, और सारे गांव को उजाड़ दिया जाता है, औरतों को घसीटा जाता है। इसी दौरान उदास सुर में कोरस शुरू होता है।)

कोरस : हाय हो न कोई लाचार कोई, दुनिया में खुदा के लिए,
दिल करे जो करें हत्याएं, कौन रोके ज़ालिमों को।
सत पापियों ने धक्के से तोड़े, सीता जैसी देवियों के।
ज़ोर जुल्म से ज़ालिमों ने इज्ज़तें उतारी कन्या कुंआरियों की।
कई घोंप कटारें मर गई, इज्ज़त अटल रख ली।
पेड़ जंगलों के सुनकर रो पड़े, पंछी विलाप करते।
दल आएंगे दुल्ले के चढ़के, तोड़े बाजू मुगलों की।
कि इच्छा जिन्हें दूसरी नहीं।

(कोरस के दरम्यान अलाउद्दीन नूरमदा को पकड़कर ले जाता है।)

पांचवां दृश्य

(मेला लगा है, मेले का शोर-शराबा है। दुल्ला अपने साथियों के साथ हुड़दंग

मचाता हुआ मेला देख रहा है, उसके गांव के तीन साथी आते हैं।)

एक : सलाम भई दुल्ले।

दो : बार का जाया।

तीन : तुम्हें मेले ठेले मुबारक हों।

दुल्ला : अरे हमजोलियो, क्यों बेगानों जैसी बातें करते हो।

एक : बेगाना तो तू हो गया है।

दो : बात को भुला बैठा है।

तीन : पीछे की तुम्हें सार नहीं।

दुल्ला : क्यों, खैरियत तो है ? गांव का क्या हाल है ?

एक : पहले की तरह ठंडी हवाएं चलती हैं।

दो : कुएं का पानी भी पहले जैसा ठंडा है।

तीन : मैदानों में धूल भी उड़ती है पर...

दुल्ला : पर क्या ?

एक : गांव का हाल हम बता नहीं सकते।

दो : बात बड़ी है, मुंह छोटा।

तीन : बताएं तो कलेजा मुंह को आता है।

दुल्ला : क्या बुझारतें बुझा रहे हो, मेरे गांव की तरफ किसी ने उंगली की तो उस उंगली को काट डालूंगा। अगर किसी ने बुरी नज़र से देखा तो उसकी आंखें निकाल दूंगा। अगर किसी ने बुरे शब्द कहे तो उसकी जुबान काट दूंगा।

एक : गांव की तरफ उंगली भी उठी है।

दो : बुरी नज़र से भी देखा गया है।

तीन : और बुरे शब्द भी बोले गए हैं।

एक : मुगलों ने गांव को तबाह कर दिया है।

दो : आग लगाकर खाक कर दिया है।

तीन : उजाड़कर खंडहर बना दिया है।

एक : तेरी लद्धी मां को बांध लिया है।

दो : तेरी बहन सलीमो को बांध लिया है।

तीन : तेरे बेटे नूरा को भी बांध लिया है।

एक : तेरी खानी पुत्रवधू को बांध लिया है।

दो : तेरी नूरमदा रानी को बांध लिया है।

तीन : तेरी झल्ल कांगड़े वाली को बांध लिया है।

एक : तेरी फत्ती बनियानी को बांध लिया है।

दो : तेरी शैला गुजरी बांध ली है।

तीन : तेरी नत्थी मिरासिन बांध ली है।

एक : तूने दिल्ली के कंगूरे ढहाने थे।

दो : तूने महलों को आग लगानी थी।

तीन : पर ये तो तख्त लाहौर वाले आए।

एक : कल बार की बंधकें लाहौर में टके-टके में बिकेंगी।

दो : सरे बाजार बार की इज्ज़त का सौदा होगा।

तीन : बार की युवतियों को लाहौर के अमीर टटोल-टटोल कर देखेंगे।

एक : माल अच्छा है।

दो : आंख चील के अण्डे जैसी है।

तीन : कद सरु जैसा।

एक : गर्दन सुराही जैसी है।

दो : चाल सांपिन जैसी है।

तीन : बार की इज्ज़त पानी-पानी हो जाएगी।

एक : लोग पूछेंगे बार का दुल्ला कहां था?

दो : और मुगल दमगजे मारेंगे, हम से डरकर भाग गया है।

तीन : किसी को क्या पता दुल्ला मामा के पास मेला देख रहा है।

दुल्ला : *(दुखी होकर)* बस करो हमजोलियो, बस करो। फोड़ डालो ये शराब की सुराहियां, दुल्ले की मूंछ की मरोड़ उतर गई, पगड़ी का मोहरा खींचकर पीछे कर दो। ये कलफ़ लगा तुर्रा नीचे कर दो। कसम है मुझे बार की धरती की, तब तक अन्न का दाना नहीं खाऊंगा जब तक बंधकों को छुड़वा नहीं लूंगा।

(जोश भरे गुस्से में दुल्ला बाहर निकल जाता है और तीनों ग्रामीण भी उसके पीछे-पीछे चले जाते हैं। कोरस आरंभ होता है और धीरे-धीरे मेले का दृश्य समाप्त होता है।)

कोरस : दुल्ले तू तो मेले में है मौज मारता।
बीती क्या है बार पर, खुदा ही जानता।
तेरे भाईचारे ने दगा कमा लिया।
शाही फौज ने बार में घेरा जमा लिया।
मेले की तू फिरता है खाक़ छानता।
बीती क्या है बार पर खुदा ही जानता।

हाथी घोड़े फौज का हुजूम चढ़ा दिया।
उन्होंने तेरी बार को तबाह कर दिया।
काट डाला वट जो था तेरे साथ का।
बीती क्या है बार पर खुदा ही जानता।
तानों में से ताना दुल्ले की जात को।
बंधक बना लिया है लद्धी मात को।
उजड़ी चीज़ों को कोई नहीं पहचानता।
बीती क्या है बार पर खुदा ही जानता।
नूरा बेटा टुकड़े-टुकड़े कर दिया।
फिरते बाजारों में हैं खून थूकते।
लानत है जीने और खाने-पीने को।
बीती क्या है बार पर खुदा ही जानता।
कल तुम्हें लाहौर में लोग रोएंगे।
लद्धियों के मेले में सौदे होंगे।
फट जाएगा गुब्बारा तेरी थोथी शान का।
बीती क्या है बार पर खुदा ही जानता।

(गांव की पंचायत बैठी है। बातचीत हो रही है। तीनों ग्रामीण दुल्ले को लेकर आते हैं। सारे मुंह मोड़ लेते हैं। दुल्ला लकीर खींचता है।)

दुल्ला : मैंने तो लकीर खींच दी है, जिसे बार की इज्ज़त प्यारी है, वे लकीर के इस तरफ आ जाएं- और जिसे जान प्यारी है, वे लकीर के दूसरी तरफ रहें।

दुल्ले के साथी : हां हां, जिसे जान प्यारी है, वह लकीर के दूसरी तरफ रहे।

बुजुर्ग : दुल्ले, तू बार की गैरत को ललकार रहा है।

दुल्ला : हां, ललकार रहा हूं।

एक : पर यह सवाल सिर्फ लकीर खींच देने से हल नहीं होगा।

दुल्ला : तो फिर किस तरह हल होगा?

बुजुर्ग : यह बहुत बड़ी बात है।

दुल्ला : बड़ी बात?

बुजुर्ग : एक तरफ लाहौर का तख्त है और दूसरी तरफ बार की ख़लकत- तख़्त वाले कहते हैं, हम हाकिम हैं- बार वालों को उनें अधीन होकर रहना पड़ेगा।

दुल्ले के साथी : वे कहते हैं बार वालों हमारे मालिया देना ही होगा। अपने अनाज में से लाहौर वालों को हिस्सा देना पड़ेगा।

दो : अय्याशी करने के लिए?

तीन : औरतें नचाने के लिए?

एक : बीच में मत बोलो।

तीन : तू चुप रह, बड़ा मोतबर बनता है।

बुजुर्ग : और बार वाले कहते हैं हम हिस्सा किस बात का दें, उन्हें देकर हमारे पास क्या बचेगा- खाएंगे क्या? लाहौर वाले हमारे क्या लगते हैं?

एक : मामे लगते हैं।

दो : कुछ भी नहीं।

तीन : हमारे सिरों में जूते मारते हैं।

चार : हमारी बहू-बेटियों को सरेआम ज़लील करते हैं।

एक : हमारे बुजुर्गों की खाल में भूसा भरकर भड़ुवे तीरंदाजी करते हैं।

दुल्ला : पर ये बातें हमें मालूम है, इन्हें बार-बार दोहराने का क्या लाभ, कोई नई बात करो।

बुजुर्ग : मैं उसी बात की तरफ आ रहा हूं, दुल्ले- यह लड़ाई अब लाहौर और बार की नहीं रही- बड़ी जंग में तब्दील हो गई है- आदमी के हकों की जंग- एक तरफ हम हैं जो सब तरह की सौग़ातें पैदा करते हैं और दूसरी तरफ वे हैं जो खाली बैठे हैं, हरामखोर खून चूसने वाले।

एक : लाहौर वाले खुद क्या करते हैं?

दो : खुद तो पानी उठाकर भी नहीं पीते।

तीन : धुले कपड़े पहनकर गद्दी पर बैठे हैं।

चार : तो और क्या वो अपने घरों में अनाज उगाएं?

दुल्ले के साथी-

एक : हुकूमत कर रहे हैं और किए जा रहे हैं।

दो : तो तू चाहता है उनकी जगह तू गद्दी पर बैठे।

तीन : तेरी जगह तो यहीं हैं, ज़मीन पर।

चार : वे क्या जानें हमारी गुज़र कैसे होती है।

एक : उन्हें तो रोकड़ा चाहिए।

दो : बारिश नहीं हुई, फ़सल नहीं हुई, उन्हें क्या?

तीन : उन्हें तो रोकड़ा चाहिए।

दुल्ला : पर अब इस रोने चिल्लाने का क्या लाभ? इस तरह रोते हुए हमें सदियां बीत गई हैं, जो भी हाकिम आता है, हमारे साथ यही सलूक करता है– लाहौर के कई सूबे बदले, उनकी कलगियों के रंग बदले, क्या हमारी हालत में कोई फ़र्क पड़ा?

सभी : नहीं, नहीं...

एक : फिर क्या सोचा है– आगे क्या करें?

दुल्ला : वही करो, जो मैं करता हूं।

एक : तू क्या करता है?

दो : लूटमार करता है।

तीन : डाके डालता है।

चार : तो फिर तेरे और लाहौर वालों में क्या फर्क हुआ?

दुल्ला : तुम अगर फर्क नहीं समझते तो न सही, मैं तो वही करूंगा।

दुल्ले के साथी: हां, हां, हम भी वही करेंगे– मुगल वैसे सीधे रास्ते पर थोड़े ही आएंगे।

बुजुर्ग : दुल्ले, बात सिर्फ तेरे तक सीमित नहीं है।

एक : जब सांदल सरदारों की खालें भूसे से भरकर लाहौर के बाहर लटकाई गईं तो हमारे बुजुर्गों की लाशें भी साथ लटकाई गईं।

दो : जब वे औरतों को बंधक बनाकर ले जाते हैं, हमारी औरतें भी साथ होती हैं।

तीन : जब तेरे घर खंडहर बनाए गए तो क्या हमारे बचे रहे?

चार : हमने कभी भी तेरा साथ नहीं छोड़ा।

एक : हम सदा तेरे साथ रहे हैं, अब भी तेरे साथ हैं और आगे भी तेरे साथ ही रहेंगे पर...

दुल्ला : पर क्या?

बुजुर्ग : हमें अपना तरीका बदलना पड़ेगा– मैं फिर कहता हूं यह लड़ाई अब दुल्ले के खानदान और अकबर बादशाह की नहीं रही।

दुल्ला : फिर किसकी है?

बुजुर्ग : यह लड़ाई मजलूमों और तख़्तों की है, यह लड़ाई मेहनतकशों और लुटेरों की है– महलों और झोंपड़ियों की है।

बुजुर्ग के साथी : हां हां, यह लड़ाई अब महलों और झोंपड़ियों की है।

बुजुर्ग : और यह लड़ाई लुटेरे बनकर नहीं लड़ी जा सकती, एकाध

सरदार की– गर्दन उतारकर नहीं लड़ी जा सकती – एक सरदार मरेगा कोई दूसरा उठ खड़ा होगा, दूसरा मरेगा तीसरा उठ खड़ा होगा, इस तरह बात सिरे नहीं लगने वाली।

दुल्ला : फिर किस तरह सिरे लगेगी ?

बुजुर्ग : सिर जोड़कर बैठें, सोचें, विचारें, बादशाह से टक्कर लेनी है, यह कोई मामूली बात नहीं है।

दुल्ला : पर क्या हमारे बुजुर्ग टक्कर नहीं लेते रहे हैं ?

बुजुर्ग : लेते रहे हैं, पर तूने कभी सोचा है, तेरे बाप–दादाओं ने किसलिए जानें कुर्बान की ? हाकिम सोचते हैं लोगों की याद्दाश्त बहुत कमज़ोर होती है, वे हमें जान–बूझकर उलझनों में डालते हैं, ज़ुल्म से ग़लत रास्ते पर धकेलते हैं और बहुत बार वे कामयाब भी हो जाते हैं– पर बात फिर भी ख़त्म नहीं होती– लोगों का क्रोध सोए नाग जैसा होता है और हमें यह तरकीब बनानी है कि डंक बिल्कुल ठिकाने पर लगे।

दुल्ला : पर यह लगेगा कैसे ?

बुजुर्ग : अगर निशाना मालूम हो।

दुल्ला : निशाना एक ही है, मुफ़्तखोर ऐशपरस्ती न कर सकें, हम अपनी किस्मत के खुद मालिक हों, हम अपने घरों में अपनी मर्ज़ी के मुताबिक रह सकें, कोई दूसरा हमारे घर में दखल न दे सके।

एक : पर वे दखल जरूर देंगे।

दो : वे कहेंगे, हम हाकिम हैं।

तीन : और वो हाकिम ही क्या, जो दूसरों के कामों में दख़ल न दे।

चार : हाकिम तो कहेंगे ही कि अगर लोटा ले कर जंगल जाना हो तो उनसे पूछकर जाओ।

(सभी हंसते हैं।)

बुजुर्ग : बात को हंसी मे मत टालो।

दुल्ला : पर बार के मुट्ठीभर लोग लाखों के लश्कर से टक्कर कैसे लेंगे ?

बुजुर्ग : हिम्मत के आगे कौन सा काम मुश्किल है ?

एक : दुल्ला तुम आगे बढ़ो।

दो : हम तुम्हारे साथ हैं।

तीन : हम जंगलों में लडेंगे।

चार : सरहदों पर लड़ेंगे।

एक : खेतों में लड़ेंगे।

दो : हाकिमों के यहां भगदड़ मचा देंगे।

तीन : फिर देखें, वे बार की तरफ कैसे आंख उठाते हैं।

चार : अगर हम अपनी जिद पर आ जाएं तो उनका जीना हराम कर दें।

एक : यहां आकर लश्कर डालें तो रात को हड़बड़ाकर उठ बैठें।

दो : उनके खेमों में आग लगी हो।

तीन : घोड़ों के दाने के तोबड़ों में ज़हर मिला हो।

चार : और घोड़े तड़प-तड़प कर मर रहे हो।

दो : उनके लिए तो कयामत आ गई हो।

तीन : और इस कयामत में इंसाफ हमारी तरफ हो।

एक : जीत हमारी होगी।

बुजुर्ग : दुल्ले, तेरा यह भी वहम है कि हम मुट्ठीभर लोग हैं, जब हम हकों की जंग लड़ेंगे तो सभी लोग हमारे साथ आ जुड़ेंगे, देहात वाले भी और शहर वाले भी।

एक : हां, लाहौर शहर के ग़रीब कौन से सुखी हैं।

दो : मैंने तो सुना है, अमीर और उनकी बेगमें पानी छिड़क कर खुद तो ठंडे कमरों में सो जाते हैं।

तीन : और उनके नौकर बेचारे गरमी में बाहर बैठे पंखे की रस्सी खींचते हैं।

चार : ग़रीब सब जगह अवाज़ार हैं, बेशक वे गांव में हैं या लाहौर में हैं।

दुल्ला : चाचा, यह बात तो मानी, पर तू जो कह रहा है कि हमें बदला लेने की कार्रवाई नहीं करनी चाहिए, यह बात जंची नहीं, इस तरह तो वे अपने सिर पर सवार हो जाएंगे।

दुल्ले के साथी-

एक : अगर वे हमारे गांव को खंडहर बना दें तो क्या हम चुप बैठे रहें ?

दो : वे हमारी औरतों को बंधक बनाकर ले जाएं और हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें ?

तीन : वे कहें हमने बार की धरती बांझ बना देनी है, और हम कहें बना दो ?

चार : उनके टके-टके के सिपाही हमारी बहू-बेटियों से मजाक करें

और हम समझें कि यह उनका हक़ है, क्योंकि वे हाकिम हैं।

बुजुर्ग : नहीं, चुप करके क्यों बैठें– हम उनकी ईंट का जवाब पत्थर से दें।

एक : हम उनकी औरतों को बंधक बनाकर ले आएं।

लद्धी : चुप करो, तुमने औरत जात को क्या समझ रखा है, पैर की जूती ? औरत के कदमों में जन्नत होती है, पुत्तर।

दूसरी : यह क्यों समझेगा, हर रोज भाभी को पीटता है।

तीसरी : इस लिहाज से तो सारे मर्द एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

चौथी : मेरे वाले समेत।

दूसरी : जहां तक औरतों का ताल्लुक है, क्या बार वाले और क्या लाहौर वाले– सब एक से हैं।

एक : तुम आदमियों के कामों में क्यों टांग अड़ाती हो ?

दूसरी : क्यों न अड़ाएं।

तीसरी : जब लड़ाई होती है, सिर पर किसे झेलनी पड़ती है ?

चौथी : उम्र भर का रोना किस के हिस्से आता है ?

लद्धी : पुत्तर, अपनी बहन-बेटी की इज्ज़त बचाने का यह मतलब नहीं कि दूसरों की बहन-बेटियों की इज्ज़त लूट लो।

दूसरी : मर्दानगी तो इसमें है कि उस हाथ को काट डालो जो तुम्हारी बहन-बेटियों की तरफ उठे।

तीसरी : उस आंख को निकाल दो जो बहन-बेटियों को मैली नज़र से देखे।

चौथी : उस टांग को चटका दो जो बहन-बेटी की तरफ बढ़े।

बुज़ुर्ग : ठीक है, यह लड़ाई अब हम मर्दों ने अकेले नहीं लड़नी बल्कि सबने मिलकर लड़नी है। यह लड़ाई हमारे बुजुर्गों ने लड़ी है और हमारे बच्चों ने लड़नी है-और इसका पैंतरा अपनी ताकत देखकर, उनकी ताकत को पहचानकर चलना है।

एक : हम उन्हें वहां घेरें जहां उन्हें हमारे आ सकने की बिल्कुल भी उम्मीद न हो।

दो : वे हमें बार में ढूंढ़ते फिरें, हम जाकर उन पर टूट पड़ें।

तीन : लाहौर वालों की नींद हराम कर दें।

चार : न सोएं, न सोने दें।

एक : वे सोए हुए भड़भड़ाकर उठें, वो देखो दुल्ला आ गया। उनकी

मांएं अगर अपने बच्चों को डराएं तो यही कहें- वो देखो दुल्ला आ रहा है।

बुजुर्ग : तेरी क्या सलाह है, दुल्ले ?

दुल्ला : मैं अकेला कौन होता हूं- सबका फैसला, मेरा फैसला।

सभी : ये हुई ना बात।

मिरासी : भई, यहां दुल्ला कौन है ?

एक : तू कौन है ?

मिरासी : भई मैंने तुमसे पूछा, दुल्ला कौन है और तू आगे से पूछता है तू कौन है- बार में परदेसियों से इसी तरह बोलने का रिवाज है ?

दुल्ला : नाराज मत हो बुजुर्ग- दुल्ला मैं हूं, कहो क्या काम है ?

मिरासी : मैं भी कहूं उस शेरनी के सिर का साईं कोई शेर ही होगा और ये गीदड़ की औलाद मझसे पूछता है, कि मैं कौन हूं। ले दुल्ले, तेरा यह खत-तेरी पत्नी नूरमदा से तो इनाम मैं ले आया हूं, अब तुमने जो देना है दो ताकि मैं चलता बनूं, *(दुल्ला कोई चीज़ देता है और मिरासी सलाम करके चला जाता है। दुल्ला खत पढ़ता है।)*

लद्धी : क्या लिखा है मेरी भाग्यवती बेटी ने ?

दुल्ला : मेरे सिर के साईं- अलाउद्दीन जब मुझे बंधक बनाकर लाया तो वह मुझे अपनी बेगम बनाना चाहता था। पर मैंने वक़्त मिलते ही उस दुष्ट के सीने में कटार उतार दी। उसका भाई जियाउद्दीन अब अपने भाई का बदला लेने आ रहा है- यह आपकी सूचना के लिए- तेरी नूरमदा।

लद्धी : मैं कह रही थी न, दुश्मनों से लड़ाई में हम औरतें भी पीछे नहीं हैं।

दुल्ला : गांव वालो, गांव की इज्ज़त बचाने का पहला इम्तिहान आ गया है। दुश्मन के हमले का जवाब देने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए।

सभी : तैयार हैं।

(नगाड़ा बजता है, गांव के लोग तैयार होकर दुल्ले के साथ निकल जाते हैं और इसके साथ ही कोरस शुरू होता है।)

कोरस : रण में आमने-सामने भिड़ेंगी तलवारें।
ज्यों आपस में घिस रही बिजली की तारें।
सिर कदमों में चढ़ा गए कई चतुर-सियाने

खोपड़ियां तरबूज ज्यों, सिर बिखरे हजारों।
नदियां बह रही खून की ज्यों पर्वत धारा
मछलियों सी हैं तैरती वहां तेज कटारें।
दुल्ला रण में गरज रहा काटो मुगल हजारों।
ज़ख्मी हुआ आख़िरकार घिरा कटारों बीच।
'शीतल ढाडी' गाएंगे ऐसे मर्दों के गीत।

छठा दृश्य

(मुगल सिपाही दुल्ले को जंज़ीरों से जकड़कर बादशाह के दरबार में लाते हैं। दरबार में कानाफूसी हो रही है।)

लद्धी : मैं कह रही थी न, दुश्मनों से लड़ाई में हम औरतें भी पीछे नहीं

बादशाह : *(दुल्ले की तरफ देखकर)* हम मुद्दत से तुम्हें अपने दरबार में देखना चाहते थे। हमने सोचा था, तू शाही लिबास में हमारे रू-ब-रू होगा, पर अल्लाह कसम हम तुम्हें इस खून सने लिबास में नहीं देखना चाहते थे।

दुल्ला : इस दरबार में आते हुए रास्ते में सदर दरवाजा भी आता है। बरसों पहले जब मैंने अभी इस दुनिया का मुंह भी नहीं देखा था, मेरे पिता फरीद और दादा सांदल की लाशों की खाल उतारकर उस दरवाजे पर लटकाई गई थी। इस शहर में आते हुए मेरे सामने दो ही रास्ते थे- तख़्त का रास्ता या तख़्ते का रास्ता। आज मुझे मेरे कदम इस रास्ते पर ले आए हैं- मैं खुशनसीब हूं। मैंने अपनी बार की सरज़मीन और अपनी रगों में बहते इज्ज़त के खून से दग़ा नहीं की। मैं तेरा शुक्रगुजार हूं।

वजीर : दुल्ले, तू उस बात को अभी तक भूला नहीं?

दुल्ला : अगर तुम मेरी जगह होते तो तुम भूल जाते? हां, तुम तो भूल ही जाते।

वजीर : हमारी बात और है।

दुल्ला : हां, तुम्हारी बात और है, लोगों की कमाई पर पलने वाले कुत्ते कभी गैरतमंद नहीं हो सकते- वे सिर्फ जूते चाट सकते हैं, पूंछ हिला सकते हैं और ज़्यादा से ज़्यादा दांत गड़ा सकते हैं।

बादशाह : जुबान संभाल कर बात की जाए- तू हमारी हिरासत में है। तुम्हें

यह नहीं भूलना चाहिए कि तू शहंशाह के दरबार में है।

दुल्ला : तू अपने टुक्कड़खोरों का, बेजुबानों का, बेशुमार दौलत का, शहंशाह तो हो सकता है, पर हमारे दिलों का शहंशाह हरगिज नहीं हो सकता। इस तख़्त पर बैठने वाला कोई भी हमारे दिलों का शहंशाह नहीं हो सकता।

वजीर : तो तेरी क्या मंशा है कि शहंशाह कटोरा लेकर भीख मांगने निकल पड़ें- इन्हें उस अल्ला-ताला दो जहान के मालिक ने हुकूमत करने के लिए भेजा है और इसमें शायद तेरी भी अकीदत है।

दुल्ला : अल्ला? तुम्हारा अल्ला हमारा अल्ला नहीं हो सकता, हमारा अल्ला और है, तुम्हारा अल्ला और है।

मौलवी : जहांपनाह, यह ईमान की तौहीन कर रहा है, यह क़ाफ़िर है, यह सख़्त से सख़्त सज़ा के हक़दार है।

दुल्ला : हक़ ईमान के लिए, अपनी गैरत की रक्षा की लड़ाई को अगर तुम्हारा अल्ला कुफ्र कहता है तो मेरा अल्ला कहता है- मेरे बंदे, तू क़ाफ़िर नहीं है- तुम्हारा ईमान तो शम्स तबरेज़ को भी काफ़िर कहता था।

बादशाह : तू अपने ईमान पर शक कर रहा है दुल्ले, पर तुम्हें किस अल्लाह ने कहा है कि तू लूटमार कर, राह चलते भोले-भाले, शरीफ व्यापारियों को लूटे, कत्लोगारत करके हमारे इंतजाम में, हमारे अमन कानून में खलल डाले, तुम्हें पता होना चाहिए, हम जो कुछ भी करते हैं अपनी रियाया के लिए करते हैं।

दुल्ला : रियाया? *(हंसकर)* पहले तू यह फैसला कर कि तेरी रियाया कौन सी है? हम या ये अहलकार? अगर हम तेरी रियाया हैं तो तू और ये अहलकार हमारी सारी मेहनत बोरियों और गठरियों में भरकर क्यों ले जाते हैं? हमारी ही कमाई से तुम ऐशपरस्ती क्यों करते हो? हमारी बनाई तलवारें हमारी ही गर्दनों पर क्यों चलती हैं? हम तेरी रियाया नहीं हैं।

बादशाह : पर तुम्हें तो हम अब भी अपनी रियाया समझते हैं।

मीर : शहंशाह रियाया का माई-बाप होता है, अगर बाप चाहे तो अपनी औलाद को माफ कर सकता है और अगर वह चाहे तो सज़ा भी दे सकता है।

दुल्ला : शहंशाह मेरा माई-बाप नहीं हो सकता- मेरा बाप फरीद था और मां लद्धी का दूध पीकर जवान हुआ हूं।

बादशाह : दुल्ले, तू हमारी रियाया है- हम तुम्हें अभी भी माफ कर सकते हैं, अगर तू बगावत का रास्ता छोड़ दे।

दुल्ला : मैं बार-बार कह चुका हूं कि मैं तेरी रियाया हरगिज़ नहीं हूं।

बादशाह : तू अभी अपने गुनाह बख्शवा सकता है।

दुल्ला : कौन से गुनाह ? अगर हक़ मांगना गुनाह है तो ऐसे गुनाह मैं बार बार करूंगा।

बादशाह : तू बदतमीज़ी और बदक़लामी से काम ले रहा है, तुम्हें अपनी औक़ात पता होनी चाहिए।

दुल्ला : और मैं तेरी औक़ात पर थूकता हूं। *(बादशाह पर थूकता है।)*

बादशाह : *(गुस्से से उठता है)* तू... सांदल का पोता, फरीद का बेटा, बार का बागी...

दुल्ला : गुस्से में तेरी शक्ल इस वक़्त उस हारे हुए कसाई जैसी लगती है जो सुबह से शाम तक खून बहाने के बाद घर वापिस आता है और अगले दिन ज़िबह होने वाले बेज़ुबानों के बारे में सोच रहा होता है।

बादशाह : *(और गुस्से में बोलता है)* हां... हां, मैं कसाई हूं- और आज का आखिरी ज़िबह होने वाला बकरा *(खंजर निकालकर दुल्ले के पेट में घुसेड़ देता है।)* तू ही है। *(खंजर मारकर किसी की तरफ देखे बग़ैर बाहर निकल जाता है और पीछे-पीछे सभी चले जाते हैं।)*

दुल्ला : *(खंजर गड़ा हुआ है, दुल्ला गिरता हुआ धीरे-धीरे बोलता है।)* ओ चगतई की औलाद, तुम लाहौर के तख़्त पर चौकड़ी तो जमाए बैठे हो पर तुम्हारे नीचे पड़े अंडे गल गए हैं- अब तुम चाहे कलगी हिलाओ चाहे पंख फैलाओ, तुम्हारा खेल अब खत्म हो गया है- हमने जान लिया है कि तुम्हारी मौजूदगी हमारे विनाश का कारण है- तुमने मुझे मार तो दिया पर भूल मत जाना, बार के बबूलों की कड़वाहट नहीं जाएगी, उनके कांटों की चुभन खत्म नहीं होगी, वे एक दिन तुम्हें ज़रूर चुभेंगे- ज़रूर चु...भें...गे....

(गिर जाता है, और मर जाता है।)

इसके साथ ही बहुत ही गमगीन सुर में कोरस-गीत शुरू होता है।

कोरस : सूरज ऊंचा उठ गया, भरी दोपहरी में
जल में रोएं मछलियां, भरी दोपहरी में
छाए बादल खून के, भरी दोपहरी में
रात ग़मों की छा गई, भरी दोपहरी में
इक तारा टूटा आकाश से, भरी दोपहरी में
(गीत के अन्तिम शब्द दोहराते हुए वे दुल्ले की लाश को बाहर ले जाते हैं।)

सातवां दृश्य

(गांव की औरतें शोकमय वेश में बैठी हैं, कोरस द्वारा उदास गीत छेड़ा जाता है।)

कहां गए नक्षत्र, कहां गए तारे,
लौटकर न आए हमारे दिल के सहारे।
कहां गए घोंसले कहां गए तिनके
वापिस न आए साजन, आसरे थे जिनके।
कहां गई हवाएं और कहां गए बादल,
वापिस न आए हमारे आंगन में साजन।
(दुल्ले के साथी आकर लद्धी के आगे हथियार रखते हैं। लद्धी उनकी तरफ सवालिया नज़रों से देखती है)

एक : हम कुछ न कर सके, ताई।

दो : वे बहुत सारे थे, ताई।

तीन : उनके पास हथियार भी बहुत थे, ताई।

एक : वे एक एक पर दस-दस टूट पड़े।

दो : दुल्ला बड़ी बहादुरी से लड़ा।

तीन : अंत में वह ज़ख़्मी हो गया।

एक : दुल्ला अब हमारे बीच नहीं रहा, ताई।

लद्धी : क्या हुआ अगर दुल्ला आज हमारे बीच नहीं रहा, तुम सब तो ज़िंदा हो, इस धरती का स्वाभिमान जिंदा है। जंग अभी खत्म नहीं हुई मेरे पुत्रो, जंग तो अभी जारी है।
(नगाड़ा उठा लेती है- नूरा उसके हाथों से नगाड़ा पकड़ लेता है

और ज़ोर-ज़ोर से बजाना शुरू कर देता है, शेष ग्रामीण ज़मीन पर रखे हथियार फिर से उठा लेते हैं- जोशभरा वातावरण है, नगाड़ा बजता रहता है और कोरस मंच पर आकर गीत गाता है।)

गीत : जब माटी उभरती धरती की तक़दीर बदलती लोगों की।
धरती के जवां बेटों का लहू रहा बहता यहा पर युग-युग से।
आखिर ये कब तक झेलेगी आखिर ये माटी बोल पड़ी
जब माटी उभरती धरती की...
तुम जल्दी से पहचानो जी, इस खंजर को, इस खंजर को।
इन खंजर वाले हाथों को, अपना दुश्मन पहचानो जी।
जब माटी उभरती धरती की...
अब फिर से कोई न रंग जाए, इस खून से अपने हाथों को।
अब फिर से कभी न मौत आए, इन हंसते-बसते गांवों को।
जब माटी उभरती धरती की...
(कोरस गाता हुआ मंच पर इस तरह चलता है जैसे पूरी कायनात गा रही हो। इसी वातावरण में नाटक समाप्त होता है।)

इस नाटक की रूपरेखा एक कार्यशाला में तैयार की गई और इसे गुरशरण सिंह तथा अमरजीत चंदन ने लिखा। गीत- किशन सिंह, नजम हुसैन सय्यद और सोहन सिंह शीतल ने लिखा है।